3

J)k lDr

किसी भी कार्य के प्रति समर्पण और त्याग ही श्रद्धा होती है। जैसा कि लोग सामान्य भाषा में श्रद्धा को एक विश्वास मात्र मानते हैं, परंतु श्रद्धा विश्वास भर नहीं है। आदि शंकराचार्य जो कि एक महान विचारक थे, उनका मानना है कि गुरू के कथन पर विश्वास करना और जब तक लक्ष्य प्राप्ति नही हो जाता जब तक वैज्ञानिक पद्धति से उस पर जुटे रहना ही श्रद्धा है। इसलिए हमारे कर्तव्यों, जिम्मेदारियों, कार्य, पूजा, हमारी गतिविधियों के प्रति भी श्रद्धा रखनी चाहिए।

श्रद्धा सूक्त ऐसे मंत्रों का समूह है जिनमें माना गया है कि श्रद्धा से ही हम विश्व विजय कर सकते है। श्रद्धा सूक्त मे बताया गया है कि कैसे हम बुराइयों को मिटा सकते है और कैसे यह सम्पूर्ण जगत् से श्रद्धा से ही चलायमान है।

J)k lDr

mÌs';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्रद्धा सूक्त के मंत्रों का उच्चारण कर पाने में; और
- हमारे जीवन की गतिविधियों मे श्रद्धा की आवश्यकता को जान पाने में ।

3.1 LET US LEARN SHRADDHA SUKTA

श्रद्धयाग्निः समिध्यते ।

श्रद्धया विन्दते हविः ।

श्रद्धां भगस्य मूर्धनि ।

वचसा वेदयामसि ।

śraddhayā'gnissamidhyate |

śraddhayā vindate haviḥ |

śraddhām bhagasya mūrdhani |

vacasāvedayāmasi |

श्रद्धा से अग्नि (समिधा) जलाई जाती है। श्रद्धा से हवी (यज्ञ में आहुति) दी जाती है। सम्पन्नता की द्योतम श्रद्धा ही है। उसको हम वाणी से व्यक्त करते हैं।

प्रि॒यं श्र॑द्धे॒ दद॑तः।

प्रि॒यं श्र॑द्धे॒ दिदा॑सतः ।

प्रि॒यं भो॒जेषु॒ यज्व॑सु ।

इ॒दं म॑ उदि॒तं कृ॑धि ।

priyaggśraddhe dadataḥ |
priyaggśraddhe didāsataḥ |
priyaṃ bhojeṣu yajvasu |
idaṃ ma uditaṃ kṛdhi |

हे श्रद्धा तू देने वाले का कल्याण कर, उसका हितकर कर। उसे हितकर भोजन दे। उसका उदय कर अभ्युदय कर।

यथा॑ दे॒वा असु॑रेषु ।

श्र॒द्धामु॒ग्रेषु॑ चक्रि॒रे ।

ए॒वं भो॒जेषु॒ यज्व॑सु ।

अ॒स्माक॑मुदि॒तं कृ॑धि ।

yathā devā asureṣu |
śraddhāmugreṣu cakrire |
evaṃ bhojeṣu yajvasu |
asmākamuditaṃ kṛdhi |

देवजन शुरवीर – प्राणरक्षकों पर जैसे श्रद्धा करते हैं ऐसे ही तु भोजों और यज्ञों पर हमारा उदय कर।

श्रद्धां देवा यजमानाः ।
वायुगोपा उपासते ।
श्रद्धां हृदय्ययाकूत्या ।
श्रद्धया हूयते हविः ।

śraddhāṃ devā yajamānāḥ |
vāyurgopā upāsate |
śraddhāgṃ hṛdayyayā''kūtyā |
śraddhayā hūyate haviḥ |

देवजन, यजमान और प्राणयाम के अभ्यायी (योगी) जन हृदय में संकल्प से श्रद्धा ही उपासना करते है। मन कें कोई संकल्प हाने पर भी श्रद्धा के समागत जाते है। श्रद्धा से यआग्नि (हवि) देते है।

श्रद्धां प्रातर्हवामहे ।
श्रद्धां मध्यंदिनं परि ।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि ।
श्रद्धे श्रद्धापयेह मा ।

śraddhāṃ prātarhavāmahe |

śraddhāṃ madhyandinaṃ pari |

śraddhāgṃ sūryasya nimṛci |

śraddhe śraddhāpayehamā |

हम प्रातः श्रद्धा का आह्वान करें। हम मध्याहन में श्रद्धा का अह्वान करें। हम सूर्यास्त में श्रद्धा का अह्वान करे।

श्रद्धा देवानधिवस्ते ।

श्रद्धा विश्वमिदं जगत्।

श्रद्धां कामस्य मातरम् ।

हविषा वर्धयामसि।

śraddhā devānadhivaste |

śraddhā viśvamidaṃ jagat |

śraddhāṃ kāmasya mātaram |

haviṣā vardhayāmasi ||

श्रद्धा से ही देव है। श्रद्धा से ही हम जगत के मूल मे हैं। श्रद्धा ही काम की जननी है। श्रद्धा ही हविषा का वर्धन करती है।

fØ;kdYkki

- किसी भी गतिविधि को शुरू करने से पहले रोज सुबह श्रद्धा सूक्त का पाठ करें।

ikBxr i'u& 3-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. श्रद्धयाग्निः ..... ।
2. श्रद्धां ..... मूर्धनि ।
3. प्रियं ..... दिदांसतः ।
4. श्रद्धा ..... जगत्।
5. श्रद्धां कामस्य ..... ।

vkiu D;k lh[kk\

- श्रद्धा सूक्त का भावार्थ।
- श्रद्धा सूक्त का उच्चारण करना।

ikBkr i'u

1. अपने शब्दों में श्रद्धा सूक्त का भावार्थ लिखिए।

References:

- Taittiriya Brahmana II.8.8

mÙkjekyk

3.1

(1)

1. समिंध्यते
2. भगंस्य
3. श्रद्धे
4. विश्वंमिदं
5. मा॒तर॑म्